।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

मैत्री, करुणा, अहिंसा ऊर्ध्व गति का मार्ग है

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 31 जनवरी : तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में दैनिक आध्यात्मिक प्रवचन मे युवाचार्य महाश्रमण ने कहा गीता के चौदहवें अध्याय में तीन गुणों की चर्चा की गई है। सत्व गुण, रजोगुण व तमोगुण। यह गुण आत्मा को शरीर के बंधन में बांधते हैं। मनुष्य का कार्य है वह परिष्कार की दिशा में आगे बढ़े । तमोगुण व रजोगुण को छोड़कर सत्व गुण की ओर अग्रसर बने। जैन दर्शन के साथ त्रिगुण की तुलना करते हुये युवाचार्य महाश्रमण ने फरमाया दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है क्रोध, मान–माया, लोभ रुपी कषाय प्रबलता के कारण आत्मा बंधती है। जैन दर्शन में लेश्या का सिद्धांत आता है। छः लेश्याओं में कृष्ण, नील और कापोत को अप्रशस्त लेश्या माना गया है तथा तैजस, पदम और शुक्ल लेश्या को प्रशस्त माना गया है। तीन अप्रशस्त लेश्या तमोगुण व रजोगुण के समान है। सत्व गुण शुक्ल लेश्या के समान है। जैन दर्शन सम्मत कर्मवाद के सिद्धांत की तुलना भी तीन गुणों के साथ की जा सकती है। आठ कर्मो को दो वर्गीकरण घाति और आघाति के रुप में किये जा सकते हैं। घाति कर्म वे हैं जो आत्मा के मूल गुणों की घात करते है। कर्मो का काम भी आत्मा को बांधना है। मनुष्य का परम लक्ष्य तो गुणातीत होना, अभोग अवस्था को प्राप्त करना होता है, क्योंकि मुक्ति के लिए, मोक्ष के लिये यह आवश्यक है, किन्तु शुभ योग और अशुभ योग में एक का चुनाव करना पड़े तो आदमी शुभ योग का चयन करें।

उन्होनें कहा कि हिंसा अद्योगति का मार्ग है। मैत्री करुणा, प्रेम, अहिंसा ऊर्ध्वगति का मार्ग है। आदमी की उत्तमता इसमें वह सत्व गुणों का विकास करें। शुभ लेश्या के भावों में रहे।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक